कर्म फल अनिवार्य है

न कीमिन्डो निकर्तवे न शक्रः परिशक्त वे। विश्वं शृणोति पश्यति।।

ऋक् ऋषिः- कुरूस्तुतिःकाण्वः। देवता-इन्द्रः।छंदः-गायत्री। ८/१८/५

परमेश्वर भक्त कुरू स्तुति, नियमित रूप से स्तुति करने वाले अपने गुरू कण्व का शिष्य परमेश्वर की निरन्तर स्तुति किया करता था। वह अपने अनुभव के आधार पर इस मन्त्र में कहता है कि -(इन्द्रः) परमेश्वर (नकीम निकर्तवे) किसी को नीचा करने के लिए दण्ड नहीं देता है, और (शक्रः) सर्व शक्तिमान होते हुए भी (परिशक्तवेन) प्रसन्न होकर विशेष सामर्थ्य नहीं प्रदान करता है। वह (विश्वं शृणोति) प्रत्येक प्राणी की स्तुति, प्रार्थना और पुकार को सर्व व्यापक होने से सुनता है और (पश्यति) उस के कर्मों और सुख दुःख को तथा आन्तरिक भाव को देखता-जानता है। परमेश्वर की अटल व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक प्राणी अपने शुभ या अशुभ कर्मों के फल स्वरूप सुख या दुःख भोगता है।

तब प्रश्न उठता है कि परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना करने का क्या लाभ है? और वृद्ध माता पिता या गुरूजन ऐसा करने का उपदेश क्यों देते हैं?

फिर स्तुति प्रार्थना क्यों?

(१) भुयाम ते सुमता वाजिनो वयं मा नः स्तरभिमातये।

अस्माञ्चित्राभिरवतादभिष्टिभिरा नः सुम्नेषु यामय।। ऋक् (७-३-२)

ऋषि- मेध्यातिथिः काण्वः। दे॰ इन्द्रः- छन्दः गायत्री।

बुद्धि के अनुरूप आचरण करने वाला कण्व शिष्य प्रार्थना करता है- हे परमेश्वर। (वाजिनःवयम्) बुद्धिबल और अन्नदिसे सम्पन्न होते हुए भी हम (ते सुमतौ स्याम) आप की दृष्टि में भले बने रहें , इस के लिए (नः अभिभाताये मा स्तः) हमें हमारे सबसे बड़े शत्रु अभिमान के आधीन मत होने दे, एतदर्थ (अस्मान) हमें (चित्रानिःअमिष्टिमिः) ज्ञान दायिनी सहायक प्रेरणाओं से (अवताद्) रक्षा कर के आगे बढ़ाओं और इस प्रकार (नःसुम्नेषुयामय) हमें सुखानुभूतियों में स्थापित करो।

निष्कर्ष-हम सुख या सफलता से अभिमानी न बन जाए।

अर्थात परमेश्वर की स्तुति हमें अहंकार से बचाती है। अहंकार का पतन अवश्य भावी है।

अर्थपोषण-वाजिनः- संस्तुतिकर्ताः निरू१२-४४, वाजः अन्ने। नि.२-१,बने नामानु.२३४

(२) इन्द्रं वृत्राय हन्तवे देवासो दधिरे पुरः। इन्द्रं वाणी रनूषत समोजसे।। ऋक् ऋषिः-पर्वतःकाण्वः। देवता-इन्द्र :।छन्द-उष्णिक्। ८-१२-२६

(देवासः) दिव्यताकामी जन (वृत्राय हन्तवे) जितेन्द्रियता के निवारक काम रूपी शत्रु को समाप्त करने के लिए (इन्द्रं पुरः दधिरे) परमेश्वर को स्तुति-उपासना द्वारा अपने संमुख रखते हैं, (ओज से इन्द्रं वाणीः अनूषत) ओज प्राप्ति के लिए परमेश्वर की वाणी द्वारा स्तुति करते हैं।

निष्कर्ष- काम शत्रु को वश में करने तथा ओज प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की सम्यक् स्तुति व उपासना करनी आवश्यक है।

वृत्रः- असुरे शत्रौच च.कामासुरः।

(३) त्वं हि सोमर्वधन इन्द्रास्युक्थवर्धनः। स्तोतृणामुत भद्रकृत्।ऋक् ८-१४-११ ऋषिः- गोषूक्त्यश्व सूक्तिनौ काण्वायनौ। देवता-इन्द्रः-छन्दः-गायत्री। हे (इन्द्र) परमेश्वर (त्वं स्तोमवर्धनः उक्थवर्धनःहि असि) आप सामगान मंन्त्रों से तथा स्तुति मन्त्रों से प्रसन्न होते हो, (उत स्तोतृजां भद्रकृत्) स्तोताजनों का कल्याण करने वाले हो।

निष्कर्षः- परमेश्वर की स्तुति से मनुष्य काम क्रोध से बचता है, परीणामतः उस का मन निर्मल होता है,और इन्द्र उसका कल्याण करते हैं। परमेश्वर ही भक्तो में स्तोत्रगान और कृतज्ञता ज्ञापन को बढ़ाता है।

(४) न त्वा रासीयामिशस्तये वसो न पापत्वाय सन्त्य।

न मे स्तोतामतीवा न दुर्हितः स्यादग्ने न पापया।। ऋक् ८-१६-२६

ऋषिः सोभरिःकाण्व। देवता-अग्निः। छंन्दः-सतोबृहती।

हे (सन्त्य) पूजनीय (वसो) निवास प्रदाता प्रभो। मैं (अभिशस्तये) किसी के मिथ्यापवाद या दोषा रोपन के लिऐ अथवा (पापत्वाय) किसी पापकर्म के लिए (त्वा न रासीय) आप से प्रार्थना न करू? इस पर प्रभु कहते हैं कि हे (अग्ने)-आगे बढ़ने के इच्छुक स्तोता, तू निश्चिन्त होकर मेरी स्तुति करता रह, क्योंकि (मे स्तोता) मेरा स्तोता (न अमतीवा) न दुष्ट बुद्धि होता है (न दुर्हितः) न किसी का अहित करता है और (न पापया स्यात्) न पापकर्म में संलिप्त होता है।

निष्कर्ष- परमेश्वर का स्तोता न किसी का अहित करता है, और न किसी पापकर्म में लिप्त होता है।

अर्थउपोषण- रासीय- रासृ शब्दे काशकृत्स्न। अमिशस्तये- अभिशस्ती नैर्धन्ये नानार्थ कोषः ४३६, अमिशस्ति दोषा रोपन सूर्यकान्त कोषण

(५) एतो न्विन्द्रं स्तवामेशानं वस्वःस्वराजम्। न राधसा मर्धिषन्नः।। ऋक् ८-८१-४

ऋषिः- कुसीदीकाण्वः। देवता-इन्द्रः। छन्दःगायत्री।

हे मनुष्यो। (एत ३ इन्द्रं स्तवाम) आओ, मिलकर परमेश्वर की प्राकृतिक देनों के

प्रति कृतज्ञता प्रदर्शनार्थ स्तुति करें, क्योंकि वह (वस्वः ईशानम्) निवास योग्य सभी पदार्थो का स्वामी है, और

(स्वराजम्) स्व-सामर्थ्य से सर्वत्र विराजमान (सर्व

व्यापक तथा सर्वज्ञ) है। (नु न्र) स्तुति के अभाव में कहीं ऐसा न हो कि वह (नःराघसा मर्धिर्षत्)। हमें धन के आधिक्य अथवा सिद्धि द्वारा उत्पन्न अभिमान और

अत्याचार के परिणाम स्वरूप मार डाले। या दुःखी कर दे।

अर्थपोषण- नु क्षिप्रपृच्छा विकल्पेषु। मर्धिषत्-मृधु उन्दने, मार डालना या दुःख देना राधसा-राधःधनानि°२-१० राधृ सामर्थ्य, राध संसिद्धै

निष्कर्ष- परमेश्वर की स्तुति कृतज्ञता ज्ञापन के लिए करनी जरूरी है। अन्यथा हमें अपने धन या सिद्धि का अभिमान हो जाता है। हम किसी पर अत्याचार या अन्याय न करते हुए भी अकड़ते रहते हैं। ऐसे में प्रभु इतना धन दे देते हैं, कि हम जिन्हें सहायता दे रहें होते हैं, वे ही हमें कुमार्ग गामी बना देते हैं।

(६) ईशा वास्यामिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा

गृधःकस्य स्विद्धनम्।। यजुः-४०-१

ऋषिः दीर्घतमाः। देवता-आत्मा। छन्दः-अनुष्टुप्रे। इस जगत में जो कुछ गतिशील दीखता है- वह सब कुछ (ईशा) ईश (परमेश्वर) और ईशा (प्रकृति)की गन्ध से सुवासित है। इन दोनों की देन है। इन के सहयोग से जो कुछ तुम्हें मिला है, उसका सुख और सन्तोष पूर्वक भोग करते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न करो। दुसरों के ऐश्वर्य को देखकर उसकी चाह मत करो-इससे ईर्ष्या द्वेष उत्पन्न होते है। (कस्य स्वित् धनम) यह धन ऐश्वर्य उस आनन्द स्वरूप परमेश्वर का है। यह न किसी दूसरे का है न तुम्हारा है।

निष्कर्ष:- ईश्वर स्तुति लोभ से बचाकर सन्तोष की वृत्ति प्रदान करती है।

(७) स्वस्ति नो अस्त्वभयं नो अस्तु नमो ऽ हो रात्राभ्यामस्तु।। अर्थव-१६-८-१ ऋषिः- गार्ग्यः। देवता-ब्रह्मणस्पतिः। छन्दः-द्विपदात्रिष्टुप्। हे ब्रह्माण्ड के स्वामिन। हम दिन रात आपकी स्तुति करने वाले बनें -अर्थात सदा आपकी स्तुति करें, ताकि हमारा सदा कल्याण हो, और सदा निर्भय रहें।

निष्कर्ष- परमेश्वर की दिन रात स्तुति (उसके आदेशों का पालन और उसके द्वारा प्रदत्त सुखों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन) करने से मनुष्य का सदा कल्याण होता है, और वह हर हाल में निर्भय होकर विचरता है।

मनोहर विद्यालंकार